2 फीट ऊंचे एक चबूतरे पर प्लास्टिक के ड्रम में रखकर उसे ढक्कन से बन्द कर देते हैं इस प्रकार 200 लीटर क्षमता वाले ड्रम को पूरा कूड़े से भर दिया जाता है। तीन दिन बाद ड्रम के निचले भाग में बने छिद्र में लगे पाइप द्वारा तरल खाद निकलने लगती है जिसे छोटे -छोटे डिब्बों में इकटठा किया जाता है और 14 दिन के बाद जब वह कूड़ा सड़ गल कर खाद बना जाता है उसे बाहर निकालकर सुखाकर चूर्ण बना देते हैं और ठोस खाद के रूप में बेचा जाता है तथा खेतों में प्रयोग करते हैं।

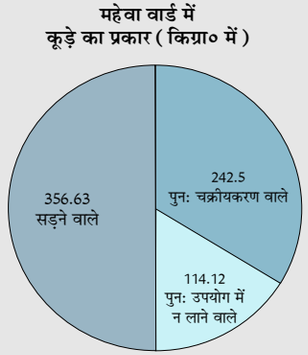

कूड़ा प्रबन्धन यूनिट से निकलने वाले खाद एवं तरल खाद को वार्ड में खेती करने वाले किसान तथा वार्ड के बाहर के किसान भी प्रयोग कर रहे हैं। प्रत्येक यूनिट से वर्तमान में औसत प्रतिमाह 120 किग्रा0 ठोस रूप में खाद एवं 160 लीटर तरल के रूप में खाद मिलती है।

प्रत्यक्ष लाभ

ठोस खाद : प्रत्येक यूनिट से निकलने वाली ठोस खाद औसतन 120 किग्रा प्रति यूनिट है इस प्रकार तीनों यूनिट से 360 किग्रा0 खाद निकलती है। यदि 05 रू0 प्रति किग्रा0 की दर से इसे बेचा जा रहा है तो कुल 1800 रू0 प्रतिमाह होते हैं इस प्रकार 12 माह में औसत कुल 21600 रू0 ठोस खाद से प्राप्त किया जा रहा है।

तरल खाद : प्रत्येक यूनिट से निकलने वाली तरल खाद औसतन 160 लीटर प्रतिमाह प्रति यूनिट होता है। 03 यूनिट से औसतन 480 ली0 खाद निकलती है। यदि इसे 02 रू0 प्रति लीटर की दर से बेचें तो 960 रू0 प्रतिमाह होगा। इस प्रकार 12 माह में 11,520 रू0 की तरल खाद तैयार होती है। इस प्रकार कचरे से कुल वार्षिक आय 33120 रुपये प्राप्त की जा रही है।

अप्रत्यक्ष लाभ : महेवा वार्ड में चारों तरफ अब साफ-सफाई रहती है। नालियाँ अब कूड़े की वजह से जाम नहीं होती है जिससे जल जमाव आदि से मुक्ति मिल रही है सबसे बड़ा लाभ यह कि इस क्षेत्र में विभिन्न तरह की संक्रामक बीमारियां नहीं फैल रही हैं। लोगों का स्वास्थ्य पहले से बेहतर हो रहा है।

एशियन सिटीज़ क्लाइमेट चेंज रिजीलियन्स नेटवर्क
(एसीसीसीआरएन)

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप
पोस्ट बाक्स नं० 60, गोरखपुर-273001
दूरभाष : 91 551 2230004 फैक्स : 91 551 2230005
ई-मेल : geag@geagindia.org, geagindia@gmail.com
वेबसाइट : http://www.geagindia.org

वार्ड महेवा : जलवायु अनुकूल की ओर एक कदम

सहभागी कूड़ा प्रबन्धन

मध्य गंगा के मैदान में जो शहर तेजी से विकसित हो रहे हैं उनमें गोरखपुर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। शहर के विकास के साथ-साथ मूलभूत सुविधाओं में वृद्धि होना अपेक्षित होता है परन्तु दुर्भाग्यवश महानगर में इन्हें खींच-तान कर बढ़ाया जा रहा है। ऐसे में बदलते मौसम की चुनौतियाँ और भारी पड़ रही हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण कभी गर्मी, कभी उमस, कभी बाढ़ व जल जमाव, तापमान का बढ़ना, उर्जा की कमी व पानी की गुणवत्ता में निरन्तर गिरावट जैसी समस्याएं दर्ज हो रही हैं। जल व जीवाणु जनित बीमारियों का प्रकोप तो पहले से ही इसकी पहचान बन चुका है। ऐसी अनगिनत समस्याओं से तार-तार आम व्यक्ति अपनी आजीविका व मूलभूत सुविधाओं के लिए हर तरफ संघर्ष करता दिख रहा है।

गोरखपुर शहर : जोखिम की रूपरेखा

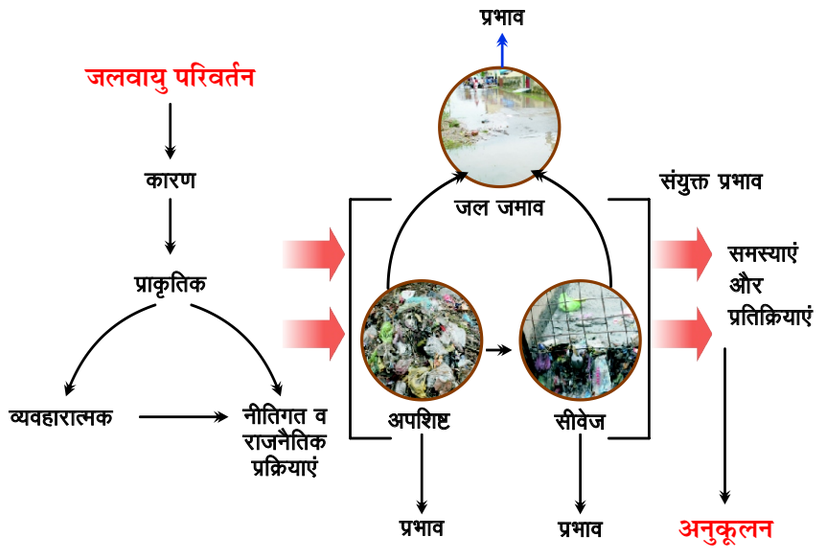

उपरोक्त ग्राफ से स्पष्ट है कि पूरे शहर की नाजुकता को बढ़ाने वाले मुख्य तीन कारक हैं- जल जमाव, ठोस अपशिष्ट और सीवेज। महानगर के अधिकांश क्षेत्रों में 3 से 4 महीनों तक जल जमाव की स्थिति होती है जिसमें सीवेज व कूड़ा प्रबन्धन की बहुत बड़ी भूमिका है। महानगर में कूड़ा प्रबन्धन की स्थितियां अत्यन्त विकट है।

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप ने रॉकफेलर फाउन्डेशन के सहयोग से शहर के महेवा वार्ड में विकेन्द्रित कूड़ा प्रबन्धन के नियोजन की मुहिम छेड़ी जिसका सकारात्मक परिणाम सामने आया।

विकेन्द्रित कूड़ा प्रबन्धन

महानगर के दक्षिणी पश्चिमी छोर पर अवस्थित छः मुहल्लों को मिलाकर बना महेवा वार्ड अपनी भौगोलिक अवस्थिति, निम्न भूमि एवं राप्ती नदी के निकट होने के कारण बाढ़ एवं जल जमाव से ग्रस्त रहता है। यह वार्ड शहर

शहर में कूड़ा प्रबन्धन की वास्तविकताएं

- प्रतिदिन 188 टन ठोस अपशिष्ट सड़कों पर या खुले क्षेत्रों में फेंके जाते हैं।
- यहां प्रतिदिन प्रति व्यक्ति 220 ग्राम ठोस अपशिष्ट उत्सर्जित होता है।
- स्थानीय प्रशासन रोजाना महानगर से मात्र 80 प्रतिशत कूड़ा ही उठा पाती है जबकि 80 टन कूड़ा सड़कों पर ही पड़ा रहता है।
- महानगर के कूड़ों में 71.47 प्रतिशत कूड़े जैविक प्रकार के होते हैं, जिनसे आसानी से खाद बनायी जा सकती है।
- ठोस अपशिष्ट को खुले वाहनों में एक स्थान से दूसरे स्थानों तक ले जाया जाता है।
- अस्पताली कचरों का कोई उचित प्रबन्धन नहीं है।
- 300 टन कूड़ा उत्सर्जन के आकड़े पिछले 10 वर्षों से दर्शाए जा रहे हैं। वास्तविक धरातल पर आज 500 टन से अधिक कूड़ा उत्सर्जन प्रतिदिन हो रहा है।

का कूड़ा निष्पादन क्षेत्र रहा है क्योंकि इसमें जनसंख्या का बसाव पूर्व में बहुत कम था बाद में गोरखपुर विकास प्राधिकरण द्वारा फल, सब्जी, गन्ना एवं मछली मण्डी के निर्माण के कारण इस क्षेत्र में भी बसाव तीव्र गति से बढ़ा। आज इस वार्ड में कुल घरों की संख्या 960 तथा कुल परिवारों की संख्या 1604 है, परन्तु कूड़ा निष्पादन का कार्य आज भी अनवरत जारी है। ऐसे में जल जमाव व गन्दगी से समुदाय त्रस्त रहता था।

समुदाय की पहल पर सम्पूर्ण वार्ड को तीन भागों में बांट कर कूड़ा प्रबन्धन करने का प्रयास किया गया। वार्ड के अन्दर तीन कूड़ा प्रबन्धन यूनिट तैयार की गई। तीनों यूनिट के माध्यम से कुल 951 घरों से निकलने वाले कूडों का प्रबन्धन किया जा रहा है। प्रत्येक घरों से निकलने वाले कूड़ों का एक सर्वेक्षण किया गया जिसके आधार पर कुल ठोस अपशिष्ट पदार्थ निम्न प्रकार से है-

कुल घरों की संख्या	औसत परिवार का आकार (संख्या)	प्रति व्यक्ति/दिन कूड़े का निस्तारण (किग्रा०)	कुल उत्पादित कूड़ा (किग्रा०)
951	5	0.15	713.25

कूड़ों का संकलन एवं प्रबन्धन

कुल घरों से निष्कासित कूड़े 713.25 किग्रा0 को प्रबन्धन करने के लिए तीनों यूनिट में लगे कुल 6 कार्यकर्ता सुबह अपने साथ ठेला लेकर कालोनी के प्रत्येक घरों के सामने जाकर कूड़ा एकत्र करते हैं उसके बाद उसे कूड़ा प्रबन्धन यूनिट पर लेकर आते है। लाये हुए कूड़ों को छांट कर अलग-अलग करते है। जो सड़ने वाले कूड़े होते हैं उसको सड़ाने के लिए रखतें है जो सड़ने योग्य नहीं होता है उसको अलग करते हैं और पुनः चक्रीय-करण न होने वाले कूडों को बेच देते हैं।

कूड़ों को एकत्र करने और अलग करने के बाद एक छिद्रयुक्त बोरे में सड़ने वाले कूड़े को भरते हैं। बोरे सहित कूड़ों को 30 फीट लम्बे, 3 फीट चौड़े,